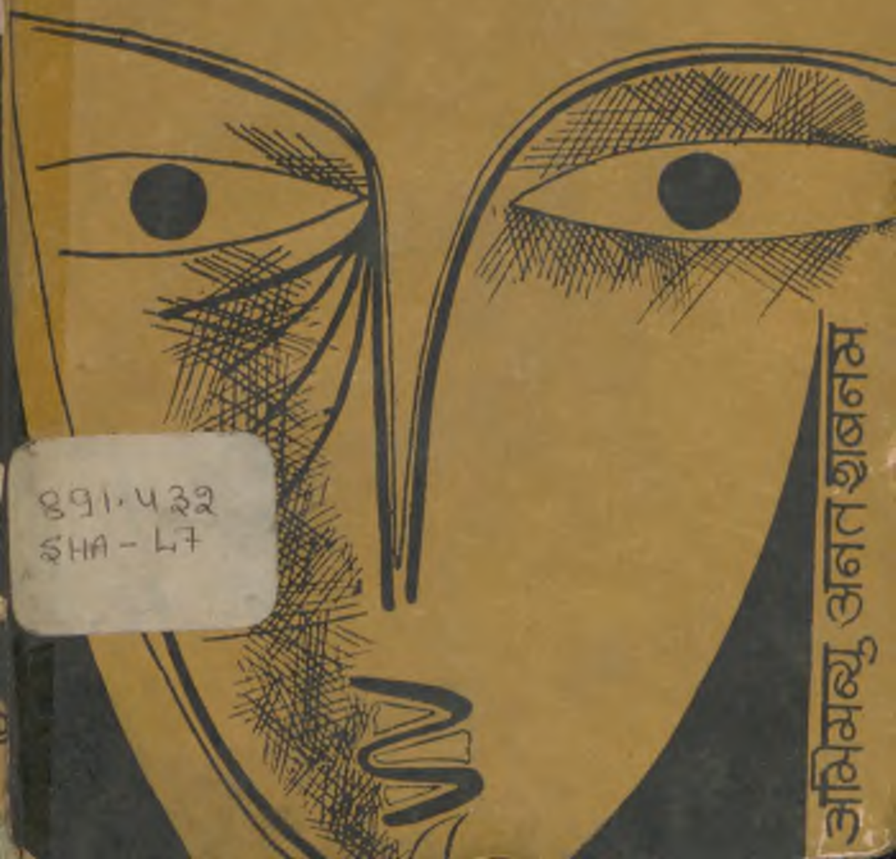
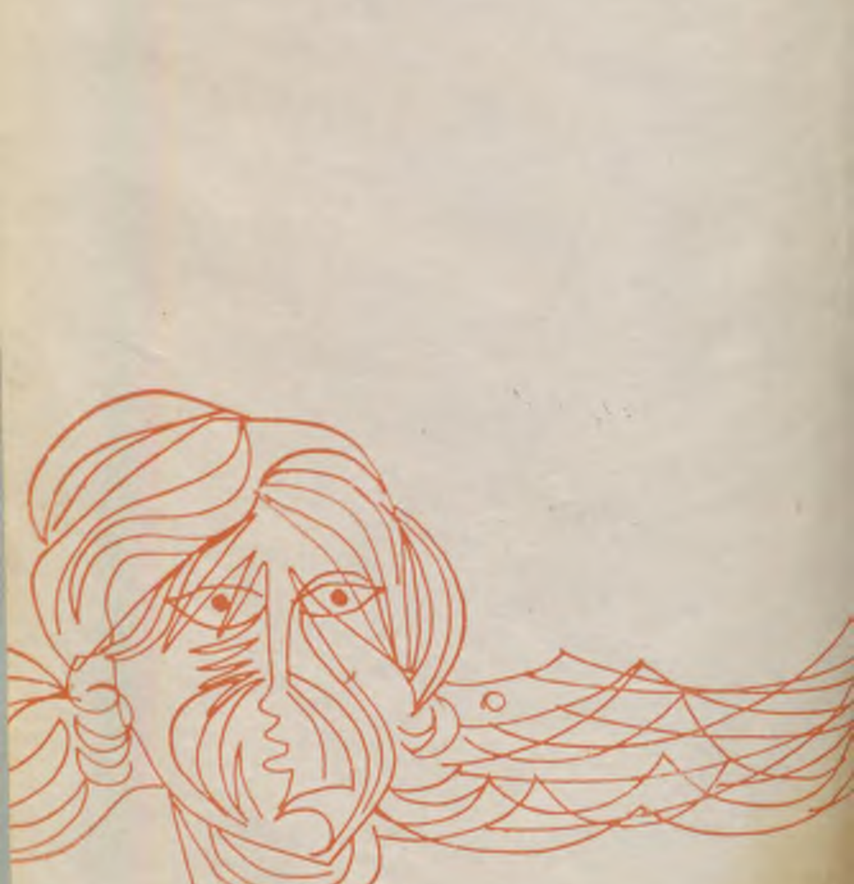
વિરોધ



अभिमन्यु अनत शबनम

विरोध
(नाटक)

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
नयी दिल्ली



विरोध

अभिमन्यु अनत शबनम



नेशनल पब्लिशिंग हाउस
(स्वत्वाधिकारी : के० एल० मलिक ऐंड संस प्रा० लि०)
२३, दरियागंज, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं
३४, नेताजी सुभाष मार्ग, इलाहाबाद-३
चौड़ा रास्ता, जयपुर

मूल्य : ७.००

स्वत्वाधिकारी के० एल० मलिक ऐंड संस प्रा० लि० के लिए नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली-११०००२ द्वारा प्रकाशित / प्रथम संस्करण १९७७ / सर्वाधिकार अभिमन्यु अनत शबनम / सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, मौजपुर, दिल्ली-११००५३ में मुद्रित

VIRODH (*Play*) Abhimanyu Anat Shabnam

पात्र

सिंहल, केतु, मासा	बेरोजगार युवक
छैला	गांव का युवक
अहमाथे	नेता
सैलानी	
अखबार वाला	
भिखारी	
प्रेमी	
प्रेमिका	
पागल	
पहला मजदूर	
दूसरा मजदूर	
पहला सिपाही	
दूसरा सिपाही	

विरोध

प्रथम अंक

एक पब्लिक पार्क ।
समय : सुबह ।

[लकड़ी की एक बेंच पर फटे-पुराने कपड़ों में केतु अपने चेहरे को दोनों हाथों में लिये बैठा है ।
मंच की एकदम बायीं ओर सिंहल अपने सामने की मूर्ति को घूरते हुए ।]

सिंहल : तुम्हें गरमी नहीं महसूस हो रही ?
केतु : मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा ।
सिंहल : इस मूर्ति की तरह ?
केतु : हां, इस मूर्ति की तरह ।

[अखबारवाला सामने से गुजरता है ।]

अखबारवाला : विश्व-कप में इंग्लैण्ड की हार हो गयी—आज की ताज़ा खबर—राजकपूर मारीशस आने वाला है । वाटरगेट की दूसरी सनसनीखेज खबर… ।
(केतु के पास पहुंचकर) अखबार चाहिए ?

[अपने चेहरे को हाथों से हटाकर धीरे-

धीरे ऊपर करके अखबारवाले को घूरता है।]

केतु : पानी बरस रहा है ?

अखबारवाला : (ऊपर देखते हुए) नहीं तो।

केतु : यहां पर जोरों की धूप है ?

अखबारवाला : (फिर से ऊपर की ओर देखकर) यहां तो छांव है ?

केतु : आसपास में कहीं कथा हो रही है ? अभी परसाद बांटा जायेगा ?

अखबारवाला : नहीं।

केतु : तो फिर अखबार लेकर क्या करना है ?

अखबारवाला : खबरें…दुनिया भर की खबरें हैं इसमें !

केतु : इसमें और क्या है ?

अखबारवाला : प्रधान मंत्री की तस्वीर…

केतु : यह तो होगा, पर हमारे बारे में क्या है ?

अखबारवाला : (आगे बढ़कर सिंहल से) अखबार चाहिए ?

[सिंहल मूर्ति की ओर देखता ही रहता है। अखबारवाला भी मूर्ति की ओर देखते हुए]

यह रेमिओलिये की मूर्ति है।

केतु : (उधर ही देखते-देखते) इसके हाथ में भी अखबार है। क्या यह भी अखबार बेचता था ?

अखबारवाला : यह मजदूरों का नेता था। इसने मजदूरों

के हक के लिए बहुत बड़ी लड़ाई लड़ी थी।

सिहल : तभी तो उसे मूर्ति बनाकर यहां खड़ा कर दिया गया है।

केतु : अपनी जगह से मुड़िया पहाड़ की तरह शाप भुगत रहा है।

अखबारवाला : (सामने की ओर इस तरह कंधे उचकाता है जिस से साफ़ हो जाता है कि वह दोनों को पागल समझ रहा है) आज की ताजा खबर ! अमरीका और चीन के बीच प्यार—आज की ताज़ा खबर—

[उसके बाहर हो जाने पर भी उसकी आवाज़ कुछ देर तक आती रहती है।]

केतु : (सिहल के पास पहुंचकर) सिहल।

सिहल : क्या है ?

केतु : अखबारवाला अपने आप में अखबार होता है।

सिहल : क्या मतलब ?

केतु : उसके पास दुनिया-भर की खबरें होती हैं।

सिहल : झूठी खबरें होती होंगी।

केतु : उससे एक बात तो जानी जा सकती थी।

सिहल : कौन-सी बात ?

केतु : मासा के बारे में !

सिहल : अरे, हां तो !

केतु : तो फिर मैं उससे पूछ आऊं ?

सिहल : अरे, तू क्या पूछेगा ! दौड़, उसे बुला ला, मैं खुद पूछता हूं।

[केतु झपटकर अखबारवाले के पीछे जाता है।]

सिंहल : (जेब से एक केला निकालकर जल्दी-जल्दी छीलते हुए) कम से कम इस आखिरी केले को तो पूरा खाने का अवसर मिला। (बड़ा-सा टुकड़ा खाते हुए) कहता है, हर चीज़ को बांटना चाहिए। साला, जिसके पास नहीं होता है वह ऐसे ही बोलता है।

[एक भिखारी को सामने से गुजरते देखकर वह जल्दी से आधे केले को जेब में रख लेता है।

भिखारी सामने पहुंचकर हाथ फैलाता है। सिहल मुंह में केले का टुकड़ा लिये उसे आगे बढ़ जाने का संकेत करता है। भिखारी जाने लगता है। उसकी पीठ पर एक गत्ते पर लिखा होता है—'ज़िंदगी के सफर में मेरे पास वापसी टिकट नहीं है।'

भिखारी के चले जाने पर सिंहल जेब से आधा केला निकालकर जल्दी से मुंह के हवाले कर देता है और छिलके को बगल

में फेंक देता है। उसका मुंह अभी भरा ही होता है कि केतु का अखबार-वाले के साथ आगमन।]

केतु : ले आया अखबारवाले को।

अखबारवाला : (अखबार को तह करके सिंहल की ओर बढ़ाते हुए) बीस सेंट।

केतु : काहे के बीस सेंट ?

अखबारवाला : अखबार की कीमत।

केतु : कौन खरीद रहा है तुम्हारा यह बासी अखबार ?

अखबारवाला : तो फिर मुझे बुला क्यों लाये ?

केतु : (सिंहल से) मैं तो इसे ले आया, अब तू पूछ तो सही।

[इशारे से एक सेकंड का समय मांगकर सिंहल मूर्ति के पीछे पहुंचता है और अपने मुंह के केले को भीतर पहुंचाकर लौटता है।]

केतु : यह तुम्हारे मुंह में क्या लगा है ?

सिंहल : (जल्दी से पोंछकर) कहां ? कुछ तो नहीं है ?

अखबारवाला : तुम्हें अखबार लेना है या नहीं ?

सिंहल : हमें तुमसे एक बात पूछनी है।

अखबारवाला : क्या पूछना है ?

सिंहल : मासा कब लौटेगा ?

अखबारवाला : कौन मासा ?

सिंहल : अरे, तुम खबरें बेचते हो और मासा की तुम्हें खबर नहीं ?

अखबारवाला : तुम दोनों को अगर पागलखाने का पता चाहिए तो मैं बता सकता हूं। तुम्हारे मासा के बारे में मुझे कुछ भी मालूम नहीं। (वह चला जाता है।)

सिंहल : तुम तो कहते थे इसे सब कुछ मालूम है।

केतु : हैरत है।

सिंहल : किस बात की ?

केतु : जिसे दुनिया-भर की बातें मालूम हैं उसे अपनी बिरादरी की बात मालूम नहीं।

सिंहल : बताओ, तुम्हारी नाक पर क्या है ?

केतु : मेरी नाक पर (हाथ को ऐनक बनाकर देखने के बाद) तुम्हारे पास शीशा है ?

सिंहल : बस, यही एक चीज़ दुनिया के पास नहीं है यार, जिससे अपनी सूरत देखी जा सके।

केतु : (नजर केले के छिलके पर पड़ जाती है) सिंहल ! (सिंहल के पास बैठकर हाथ के इशारे से पूछता है—यह क्या है ?)

सिंहल : मासा के बारे में सोचो।

केतु : (उठकर) कब आयेगा वह ?

सिंहल : सूरज नीचे से ऊपर आ गया।

केतु : मासा ऊपर से नीचे कब आयेगा ?

सिंहल : इसमें मासा का क्या दोष ? बड़े लोगों तक तो पहुंचने ही में काफी समय लग जाता

है। (थमकर) मैं ज़रा बैठ जाता हूं।

[आगे बढ़ते हुए केले के छिलके पर पैर पड़ जाने के कारण गिर पड़ता है। केतु आगे बढ़कर उसे उठाता है।]

केतु : तुमने चोरी से केला खाया था। तुमने बांटा नहीं।

सिंहल : क्या कह रहे हो ?

केतु : हां ! नहीं तो तुम गिरते नहीं।

[उसे कंधे का सहारा देकर बेंच पर बिठाता है।]

तुम्हें चोट तो नहीं आयी ?

[सिंहल चुप रहता है।]

बहुत जोरों की गरमी है।

सिंहल : अभी तो कह रहे थे, तुम्हें गरमी-फरमी कुछ नहीं गलती।

केतु : कोई आ रहा है।

[मासा का प्रवेश। उसके कपड़े दोनों से बेहतर हैं।]

सिंहल : (अपनी जगह से उठकर) तुमने तो बहुत देर कर दी। क्यों, साहब मान गये न ?

केतु : मिल गयी नौकरी हमें ?

[बिना कोई उत्तर दिये मासा बेंच पर बैठ जाता है ।]

सिहल : यह उदास है ।

केतु : नौकरी नहीं मिली ।

मासा : एक सिगरेट लाओ ।

केतु : (जेब से सस्ती सिगरेट का पैकेट निकालकर उसमें से अधजली सिगरेट निकालकर] आधी है ।

[मासा बिना कुछ कहे उसके हाथ से सिगरेट लेकर मुंह तक पहुंचाता है ।]

(सिहल से) दियासलाई है तुम्हारे पास ?

[सिहल सिर हिलाकर ना करता है । कालेज का एक लड़का और लड़की हाथ में पुस्तकें लिये एक-दूसरे का हाथ थामे सामने से गुजरकर मूर्ति के पास चबूतरे पर बैठ जाते हैं ।]

सिहल : (केतु के कान में) कालेज का लड़का है, इसके पास माचिस जरूर होगी । तुम जाकर मांग लाओ ।

केतु : तुम खुद क्यों नहीं जाते ?

सिहल : ठीक है, मैं खुद जाता हूं ।

[आगे बढ़कर छात्रों के एकदम पीछे एक क्षण खड़े रहने के बाद लौट आता है ।]

सिंहल : (केतु से) बेहतर है कि तुम ही मांगो ।

केतु : तुमने क्यों नहीं मांगा ?

सिंहल : उस समय दोनों के बीच ऐसी बातें हो रही थीं कि हस्ताक्षेप अच्छा नहीं था ।

केतु : तो फिर वे बातें खतम हों, फिर मैं पहुंचूं।

मासा : तब तक साहब का दरवाजा हमारे लिए वंद हो जायेगा ।

केतु : खैर, मैं मांग लाता हूं । (छात्रों के पास पहुंचकर) आप दियासलाई दे सकते हैं ?

[लड़का लड़की की ओर देखता है । लड़की अपना हैंड बैग खोलकर उसमें से मैंच-बाक्स निकालकर केतु को देती है । केतु उसे लेकर मासा के पास आता है । उसकी सिगरेट सुलगाता है ।]

साहब ने क्या कहा ?

मासा : (कश के बाद) बासी सिगरेट ! एकदम बेमज़ा है ।

केतु : साहब ने क्या कहा ?

मासा : पहले माचिस लौटा आ । (केतु माचिस लौटाता है ।)

सिंहल : तुमने तो कहा था कि आज हमें नौकरी मिलकर ही रहेगी ।

मासा : वह तो मैं अब भी कह रहा हूं, पर साहब…!

केतु : साहब ने क्या कहा ?

मासा : साहब तुम्हारा चाचा थोड़े ही है कि जब चाहो मिल आओ। घण्टों तक उसके सेक्रेटरी के पांव पड़ता रहा तब कहीं जाकर आधे घंटे बाद उससे मिलने का समय मिल सका है। मैं सोचता हूं आधा घंटा होने को है। मैं चलूं।

[उठकर जाने लगता है।]

केतु : जल्दी आना।

मासा : तुम्हारे पास कंघी है ?

[दोनों सिर हिलाकर ना करते हैं। उंग-लियों से अपने बाल संवारते हुए मासा चला जाता है। सिहल उसके पीछे-पीछे मंच के कोने तक जाता है और केतु बेंच पर पहली वाली मुद्रा में बैठ जाता है।]

केतु : क्यों सिहल, तुम्हें विश्वास है कि हम तीनों को नौकरी मिलकर रहेगी।

सिहल : मैं तुम्हारा नेता नहीं हूं। मासा है। इसका जवाब उसी के पास होना चाहिए।

केतु : क्या यह जरूरी है ? तुम भी तो मेरे मित्र हो !

सिहल : बेकार हूं।

केतु : मासा भी तो बेकार है।

सिहल : हम तीनों को नौकरी चाहिए।

केतु : इस धरती पर यह हमारा हक हैं।

सिहल : तो फिर नौकरी नहीं मिलेगी।

केतु : क्यों नहीं मिलेगी ?

सिहल : तू उसे हक बताना बंद कर। हक यहां किसी को नहीं मिलता।

केतु : और नौकरी ?

सिहल : वह साहब पर निर्भर है। अगर उसने मासा को अपना भतीजा पहचान लिया तो जरूर मिल जायेगी।

केतु : पर हम तो साहब के भतीजे नहीं हैं।

सिहल : भतीजे के मित्र होने से बात बन जाती है !

केतु : यह सर्टिफिकेट का काम कर जाता है ?

सिहल : ऐसा ही समझ लो। (थमकर) तुम्हारे पास पैसा है ?

केतु : (चारों ओर देखकर) मेरे पास ?

सिहल : हां !

केतु : एक फूटी कौड़ी भी नहीं। क्या करोगे?

सिहल : जब है ही नहीं तो फिर कोई सवाल ही नहीं पैदा होता।

[दोनों प्रेमी अपने स्थान से उठकर बीच में जाते हैं।]

सिहल : (केतु के कान में) पूछ, इनके पास सिगरेट है।

केतु : (झिझक के साथ आगे आकर) आपके पास⋯।

[दोनों केतु को अनदेखा कर चले जाते हैं। केतु असहाय-सा सिंहल की ओर देखता है।]

सिंहल : तुम्हें मांगना भी तो नहीं आता। तुम यहीं रहो, मैं सामने की दुकान से आता हूं सिगरेट लेकर। (चला जाता है।)

[केतु फिर से बेंच पर बैठ जाता है। इस बार उसकी मुद्रा एकदम किसी भिखारी की-सी होती है। एक सैलानी अपने कैमरे के साथ सामने आ खड़ा होता है। मूर्ति को गौर से देखने के बाद उसकी तस्वीर के लिए एंगल लेता है। एकाएक उसकी नजर केतु पर पड़ती है तो वह जल्दी से उसकी तस्वीर के लिए एंगल लेता है। फिर तस्वीर खींचकर सैलानी जेब से रुपया निकालकर केतु की ओर बढ़ाता है।]

सैलानी : मेर्सी बोकू। तेने !

केतु : (एकाएक चौंककर) यह क्या है ?

सैलानी : प्रेने एं पूर ब्वार !

केतु : मैं आपकी भाषा नहीं समझता।

सैलानी : टेक इट···आई गिव यू···प्रेज़ेंट।

केतु : (इशारे से) मेरे देश की भाषा में बोलो !

[सैलानी इशारे से समझाना चाहता है, तभी सिंहल आ जाता है।]

सिंहल : क्या बात है, केतु ?

[केतु सिंहल की बगल में पहुंचकर खड़ा होता है ।]

सैलानी : ज़े प्री ला फ़ोतो दे वोत्र आमी ! आलोर ज़े ल्वी रेकोंपांस ।

सिंहल : हिंदी में बोलो···

सैलानी : (पैसा देते हुए) आई गिव यू जीस रुपी···।

सिंहल : ना रुपी ! (हाथ से इन्कार करते हुए)

[सैलानी रुपया उसके हाथ में थमाना चाहता है और दोनों पीछे हट जाते हैं। सैलानी मुंह बनाकर चला जाता है। दोनों एक-दूसरे को देखते रहते हैं।]

केतु : यह कौन था ?

सिंहल : आंख नहीं है तेरी क्या ? टूरिस्ट था।

केतु : जिन लोगों के कारण अब मछलियां नहीं मिलतीं···?

सिंहल : चुप रहो।

केतु : तुम नाराज़ क्यों हो ? सिगरेट मिली तुम्हें ?

सिंहल : हंस देने से दूकानकार दे देता क्या ? पैसा था मेरे पास जो सिगरेट मिलती ?

केतु : टूरिस्ट तो पैसा दे रहा था, क्यों नहीं लिया ?

सिंहल : तुम जानते हो, मेरा भाई आज कहां है ?

केतु : कैद में।

सिंहल : क्यों ?

केतु : उसने एक टूरिस्ट की हत्या कर दी थी।

सिंहल : हां, क्योंकि उस टूरिस्ट ने मेरी बहन को सौ रुपये दिये थे और मेरी बहन ने पैसे ले लिये थे...।

केतु : यह टूरिस्ट होशियार था। इसने हमें सौ रुपये न देकर एक ही रुपया देना चाहा। लगता है अपनी मौत से डरता है।

[फिर से बेंच पर जा बैठता है। सोचने की मुद्रा।]

सिंहल : मासा फिर देर करने लगा। लगता है, साहब ने उसे भतीजे के रूप में पहचान लिया है। बस, अब तो उसके लौटने की देर है। केतु, अब नौकरी मिली ही समझो। केतु ! यार क्या कर रहे हो ?

केतु : सोच रहा हूं।

सिंहल : ठीक है, मैं सोचने वाले आदमी को महत्त्व देता हूं। (थमकर) पर भाई, सोच क्या रहे हो ?

केतु : अमरीका के राजा बनने की बात।

सिंहल : तुम और अमरीका के राजा !

केतु : हां।

सिंहल : पर अमरीका का कोई राजा नहीं होता।

केतु : तो फिर किसी भी ऐसे देश का राजा जहां से मैं हर महीने बहुत सारे पैसे इस छोटे देश को भेजता रहूं।

सिंहल : चुप रहो, कोई आ रहा है।

[भिखारी सामने आकर दोनों को देखता है, फिर चलने लगता है।]

सिंहल : ए भाई, ठहरो तो सही। तुम्हारे पास एक सिगरेट ज्यादा है ?

[भिखारी बिना कुछ कहे जेब से एक सिगरेट निकालकर सिंहल की ओर बढ़ा देता है।]

सिंहल : माचिस है तुम्हारे पास।

[सिर हिलाकर भिखारी चला जाता है।]

सिंहल : (केतु से) आइन्दा जब मेरे पास सिगरेट हो तो तुम कम से कम दियासलाई रखे रहना।

[मुंह में सिगरेट लिये इधर से उधर चहलकदमी करने लगता है।]

केतु : (बेंच से कूदकर नीचे आते हुए) तुम्हें माचिस की चिंता है ?

सिंहल : देख तो रहे हो।

केतु : इस चिंता से बचा जा सकता है।

सिंहल : कैसे ?

केतु : सिगरेट को फेंककर।

सिंहल : चलकर बैठ। (केतु बेंच पर बैठ जाता है) इधर आ। (केतु उठकर उसके पास आता है) मेरे लिए कहीं से आग ढूंढ़ ला।

केतु : मैं ? कहां से ?

सिंहल : जहां से भी हो।

[अखबारवाले का खाली हाथ प्रवेश।]

केतु : भाई, जरा ठहरो तो।

[अखबारवाला बिना कुछ कहे ठहर जाता है।]

तुम्हारे पास दियासलाई है ?

अखबारवाला : वह तो है।

केतु : जरा दे सकोगे ?

अखबारवाला : बदले में एक सिगरेट है तुम्हारे पास ?

केतु : वह तो मिल जायेगी।

[सिंहल के पास पहुंचकर उसके मुंह से सिगरेट लेकर अखबारवाले के पास पहुंचता है। अखबारवाला उसके हाथ से सिगरेट लेकर दियासलाई की डिबिया उसे थमाकर चल देता है। माचिस लिये

वह सिहल के पास पहुंचता है ।]

केतु : लो माचिस ।
सिहल : क्या करूंगा लेकर इसे ?
केतु : इसके लिए मेरे पीछे जो पड़े हुए थे ।
सिहल : तू एक काम कर सकता है ?
केतु : और ?
सिहल : बस, एक आखिरी ।
केतु : (रुआंधू स्वर में) बता ।
सिहल : (चिल्लाकर) तू जाकर किसी कोने में बैठ ।

[केतु धीरे से बेंच पर बैठ जाता है । सिहल बेसब्री से चहलकदमी करने लगता है ।]

केतु : सिहल !
सिहल : क्या है ? तू चुपचाप नहीं बैठ सकता क्या ?
केतु : तुम्हें भूख नहीं लगी है क्या ?
सिहल : नहीं ।
केतु : पर मुझे तो जोरों की भूख लगी है ।
सिहल : तो मैं क्या करूं ?

[केतु चुप हो जाता है और सिहल चहलकदमी करने लगता है । केतु बेंच से उठकर मूर्ति के सामने पहुंचता है । उसे कुछ क्षण घूरने के बाद ।]

केतु : तुम कहते थे, यह आदमी मजदूरों का नेता था।

सिहल : अखबारवाला कहता था।

केतु : यह गरीब के हक के लिए लड़ता था।

सिहल : और क्या पूछना है ?

केतु : ऐसा आदमी आज क्यों नहीं है ?

सिहल : यह तू मुझसे पूछेगा ? अपनी मां से क्यों नहीं पूछता ?

केतु : मेरी मां बेचारी को क्या मालूम !

सिहल : उससे पूछना, उसने तुम जैसे बेकार को क्यों जन्म दिया ?

केतु : वह तो तुम भी हो, सिहल !

सिहल : केतु ! (थमकर) बैठ जा, यार।

[केतु बैठ जाता है—खामोशी]

केतु : सिहल ! (सिहल उसकी ओर खीज से देखता है) नौकरी मिल जाने पर हम क्या करेंगे ?

सिहल : झक मारेंगे।

केतु : मैं अपनी मां को अस्पताल से निकालकर घर ले जाऊंगा। वहां ठीक से दवाई नहीं मिलती। मैं उसके लिए अपने हाथों से दवाई खरीद लाऊंगा।

सिहल : लेकिन इस वक्त तो चुप रह सकता है न !

[मूर्ति के पास के चबूतरे पर जा बैठता है।]

केतु : सिंहल, (थमकर) मासा इस बार भी देर करने लगा। (खामोशी—अपने-आपसे) नौकरी नहीं मिली तो ? (रुआंसू होकर) मेरी मां अस्पताल ही में रह जायेगी।

सिंहल : तू चुप भी रहेगा ?

केतु : तुम्हारे पास अब केला नहीं है क्या ?

सिंहल : ढेला है।

केतु : सिंहल, नौकरी मिल जाने पर तुम अपने बेटे को खूब पढ़ाना। खूब पढ़ाना ताकि···

सिंहल : ताकि वह नेता बन जाये।

केतु : नहीं, ताकि वह डाक्टर बन जाये। पूछो क्यों।

सिंहल : क्यों ?

केतु : डाक्टर बनकर वह कोई ऐसी दवा ढूंढ़ निकाले जिससे आदमी को भूख नहीं लगे। फिर तो नौकरी तलाशने की यह कमरतोड़ नौकरी नहीं करनी पड़ेगी।

सिंहल : (अपनी जगह से उठकर आगे बढ़ता है) मासा आ गया।

केतु : (बेंच से उठकर) नौकरी आ गयी।

[सिंहल उसे घूरकर देखता है और वह मूर्ति की ओर मुड़ जाता है। केतु आकर सीधे बेंच पर जा बैठता है।]

सिंहल : तुम खुश दीख रहे हो।

केतु : (एकाएक पास आकर) साहब ने तुम्हें भतीजा मान लिया न ?

[सिंहल केतु की ओर देखता है और वह पीछे को लौट जाता है।]

मासा : (सिंहल से) तुम्हारे पास सिगरेट है ?

केतु : दियासलाई है।

मासा : तुम दोनों किसी भी काम के काबिल नहीं निकले। तुममें से किसी एक के पास भी सिगरेट नहीं।

केतु : अखबारवाला होशियार निकला। सिगरेट लेकर चला गया।

सिंहल : साहब ने क्या कहा ?

मासा : पहले सांस तो लेने दो।

सिंहल : मासा ! बता, साहब ने क्या कहा ?

मासा : अरे, मेरी सूरत देखकर पता लगा लिया होता !

सिंहल : बात नहीं बनी क्या ?

मासा : बात कैसे बनती, जब उसने मुझे भतीजा माना ही नही।

केतु : मतलब नौकरी नहीं मिली ?

सिंहल : अब क्या किया जाय, मासा ? तुम्हारी बातों ने तो बड़ी-बड़ी उम्मीदें दी थीं।

मासा : हम भी विरोध प्रदर्शन में भाग लेंगे !

केतु : यह क्या होता है ?

मासा : बेकारी और बढ़ती महंगाई के खिलाफ़ यूनियन प्रदर्शन करेगी। हम भी उसमें भाग लेंगे !

सिंहल : उससे हमें मिलेगा क्या ?

मासा : सुना है इन लोगों के साथ टेढ़ी अंगुली घी आसानी से निकल जाता है।

सिंहल : लेने के देने भी पड़ सकते हैं।

मासा : यही सही यार ! जेल में दो जून रोटी तो मिल जायेगी।

केतु : वहां मक्की का भात मिलता है।

मासा : वही सही।

सिंहल : तो फिर हम विरोध प्रदर्शन में भाग लेंगे।

केतु : जरूर लेंगे।

सिंहल : लेकिन…?

मासा : लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। दो में से एक होकर रहेगा।

केतु : हां, दो में से एक होकर रहेगा ?

सिंहल : ठीक है, तो फिर चलो।

केतु : ठीक है, तो फिर चलो।

[सिंहल सबसे पहले आगे निकलता है। मासा केतु की ओर देखता है।]

तुम चलो, मैं आ जाऊंगा !

मासा : चलो !

[केतु सिर झुकाये धीरे-धीरे बढ़ता है। उसके पीछे-पीछे मासा भी बाहर हो जाता है।]

[**धीरे-धीरे अंधेरा**]

दूसरा अंक

वही दृश्य :

समय : दोपहर ।

[भिखारी अपनी सफेद दाढ़ी के साथ मूर्ति के पास बैठा सिगरेट का कश लेता हुआ। छैला कंधे पर टोकरी थामे दौड़ता हुआ सामने आता है। पीछे कुत्ते का भौंकना जारी रहता है। वह बीच में पहुंचकर अपनी पतलून के पांयचे को कठिनाई से ऊपर उठाकर कुत्ते के काटे को देखता है। भिखारी उसे एक क्षण देखता है, फिर हौले से हंसकर धीरे अनचाहे स्वर में पूछता है]

भिखारी : क्यों भाई, क्या हुआ ?

छैला : हरामखोर कुत्ते ने अपने चोखे दांतों को मेरी हड्डी तक पहुंचा दिया।

भिखारी : कुत्ते यों ही नहीं काटते हैं, भाई।

छैला : (खीजकर) यही कहना चाहते हो न कि पहले मैंने उसे काटा होगा ?

भिखारी : उसकी पूछ तुम्हारे पांव के नीचे आ गयी होगी।

छैला : मैं दीवार पर नहीं, रास्ते पर चल रहा था।

भिखारी : तो फिर···खैर, छोड़ो।

छैला : कह डालो।

भिखारी : दीवार पर तुम्हारी परछाईं पड़ गयी होगी।

छैला : तो फिर मेरी परछाईं को काटा होता।

भिखारी : ख़ून निकल रहा है क्या ?

छैला : निकलने में अधिक कसर भी तो नहीं है।

भिखारी : आओ, मैं उस पर सिगरेट की राख लगाये देता हूं। ठीक हो जायेगा।

छैला : अगर यह कोई मरहम हुआ तो रखे रहो। मुझे मुफ्त में मुसीबत नहीं मोल लेनी है।

भिखारी : वह तो तुम मोल ले ही चुके।

छैला : तुम्हारा मतलब है कि कुत्ते ने मुझे मुफ्त में काटा है।

भिखारी : मेरा मतलब कुछ और था। खैर···पर तुम हो कौन ? इस गली में तो तुम्हें पहले कभी नहीं देखा।

छैला : पहले अपने को कुत्ते से कटवाने का विचार हुआ ही नही था।

भिखारी : तुम तीखे लग रहे हो। (थमकर) अगर मैं तुम्हारे किसी काम आ सकूं तो निस्संकोच बताना।

छैला : (पास आकर) मैं यहां बैठ सकता हूं ?

भिखारी : तुम सरकार को कर चुकाते हो ?

छैला : कैसा कर ?

भिखारी : यहां तो बच्चा मां के पेट से ही कर चुकाना शुरू कर कर देता है। खैर, तुम बैठ सकते हो! (उसके बैठने के बाद) कैसा है, तुम्हारा दर्द ?

छैला : कैसा दर्द ?

भिखारी : कुत्ते का काटा...।

छैला : ओह, वह दर्द! अब भी ताजा है!

भिखारी : तुम इधर पहली बार आये दीख रहे हो!

[छैला बिना कुछ कहे अपने घाव पर फूंक मारने लगता है।]

यह बचपना है।

[छैला सर उठाकर वृद्ध को देखता है।]

दर्द को फूंक से दूर करना सचमुच बचपना है! हम मुद्दतों से इस बचपने को करते आ रहे हैं। इसीलिए हमारा दर्द ज्यों का त्यों है।

छैला : कोई तरीका ?

भिखारी : दर्द मिटाने का ?

छैला : हां।

भिखारी : दवाई चाहिए।

छैला : कौन-सी दवाई!

भिखारी : डाक्टर बता सकता है। इसी से उसकी रोज़गारी चलती है।

छैला : दूसरे के दर्द से !
भिखारी : नहीं, दवाई देने से।
छैला : (एकाएक उठकर) मुझे देर हो जायेगी।
भिखारी : कहां जाना है तुम्हें ?
छैला : मुझे एक बड़े आदमी से मिलना है।
भिखारी : कौन है वह ?
छैला : पहले वह हमारे गांव में रहता था। पर जब हमारे गांव में रहता था उस समय बड़ा आदमी नहीं था। (थमकर) बड़ा बनते ही वह गांव छोड़कर शहर में आ बसा है। भला बड़ा आदमी गांव में क्यों रहने लगा ?
भिखारी : वह बड़ा कैसे बन गया ?
छैला : लोगों ने बना दिया है ?
भिखारी : तुम्हारी टोकरी में क्या है ?
छैला : हार है—फूलों का हार।
भिखारी : क्या करना है उससे ?
छैला : क्या होता है फूलों के हार से ?
भिखारी : नेताओं का स्वागत होता है।
छैला : तुम जान-बूझकर ढिठाई करते हो।
भिखारी : जनता की तरह ?
छैला : हां, जनता की तरह···(सोचकर) जनता ढिठाई करती है क्या ?
भिखारी : बार-बार हार पहनाकर हार खाने की।
छैला : मैं गांव का आदमी हूं।

भिखारी : यह तो मैं जानता हूं।

छैला : फिर भी तुम ऐसी बातें किये जा रहे हो जो मेरी समझ में नहीं आतीं।

भिखारी : तुम्हें किससे मिलना है, तुमने बताया नहीं।

छैला : यह किसकी मूर्ति है?

भिखारी : है इतिहास का कोई पागल।

[पागल रास्ते में गेंद उछालता हुआ सामने से गुजरता है। वह जान-बूझकर गेंद बूढ़े के सिर पर दे मारता है। फिर आगे बढ़कर गेंद उठाता है।]

पागल : (उसके कानों तक मुंह ले जाते हुए इस तरह बोलता है जैसे वृद्ध बहरा हो) समुन्दर में आग लग गयी है। (कुछ आगे जाकर पीछे को हट आता है, दूसरी ओर से कान तक मुंह ले जाते हुए) नगरपालिका के सामने एक बहुत बड़ी दुर्घटना हो गयी है। (थमकर) एक बहुत बड़ी लॉरी के नीचे एक चींटी आ गयी है। उसकी हड्डियों के टूटने से इतना शोर हुआ कि क्या कहें!

भिखारी : इतना खून बहा, इतना खून बहा कि तुम लोगों को रास्ता पार करने के लिए नाव लेनी पड़ी।

[पागल हंसता हुआ चला जाता है।]

छैला : पागल है। भला समन्दर में आग लग सकती है ?

भिखारी : यही तो रोना है कि नहीं लग सकती।

छैला : इसमें रोना क्यों ?

भिखारी : आग लग जाती तो अच्छा होता। कम से कम बड़ी मछलियां छोटी मछलियों को खाना तो बंद कर देतीं।

छैला : तुम्हारी बातें अजीब हैं।

[नेपथ्य से नारे आते हैं।]

आवाज़ें : इस अन्याय का अंत हो ! इस अन्याय का अंत हो !!
हमें हमारा अधिकार मिले ! हमें हमारा अधिकार मिले ! हम भी आदमी हैं !

छैला : ये कैसी आवाज़ें हैं ?

भिखारी : विरोध प्रदर्शन !

छैला : यह क्या होता हैं ?

भिखारी : तुम्हें नहीं मालूम ?

[छैला भोलेपन के साथ सिर हिला देता है।]

ये असन्तुष्ट लोग हैं। अपना हक मांग रहे हैं।

छैला : किससे मांग रहे हैं अपना हक ?

भिखारी : जिससे लोगों को वचन मिला था।

[आवाज़ें इस बार और भी स्पष्ट होती हैं ।]

छैला : वचन तो हमें भी मिले थे ।

भिखारी : पूरे हो गये होंगे ।

छैला : कहां पूरे हुए । पूरे हो गये होते तो मैं इधर आता ही क्यों ?

भिखारी : तो तुम भी अधिकार के लिए निकले हो ।

छैला : मैं अपने गांव की बैठक का प्रधान हूं ।

भिखारी : सूरत से नहीं दीखते ।

छैला : तो फिर सूरत से क्या दीखता हूं मैं ।

भिखारी : बस, प्रधान नहीं दीखते हो बाकी सब कुछ—खैर, तुम्हें भी अगर अधिकार की मांग है तो यहां नाहक समय क्यों गंवा रहे हो, तुम भी जुलूस में मिल क्यों नहीं जाते !

[नेपथ्य में नारे आते रहते हैं ।]

छैला : मैं जुलूस में क्यों मिलूं ?

भिखारी : ताकि तुम भी अपने हक के लिए चिल्ला सको ।

छैला : मुझे अपने हक के लिए चिल्लाना नहीं है ।

भिखारी : बिना चिल्लाये यहां कुछ नहीं मिलता ।

छैला : मैं अपने गांव के मजदूरों का प्रतिनिधि हूं । मुझे उस आदमी से मिलकर अपनी समस्याएं सामने रखनी हैं जो आज बड़ा

आदमी बन गया है।

भिखारी : क्या हैं तुम्हारी समस्याएं ?

छैला : अब मैं तुम्हें नहीं बता सकता। सिर्फ उसी को बताना है।

भिखारी : जो जब तुम्हारे गांव में था तो छोटा आदमी था ?

छैला : जो इस शहर में बड़ा आदमी है। सुना है पुलिस वाले एड़ी ठोंक कर उसे सलाम करते हैं।

भिखारी : तुमने उसका नाम नहीं बताया।

छैला : तुम्हें उसका घर मालूम है ?

भिखारी : पहले उसका नाम तो जानूं।

छैला : अखबारों में उसके चित्र आते रहते हैं।

भिखारी : अखबारों में तो सैकड़ों लोगों के चित्र आते रहते हैं।

[पीछे से आवाज़ें आती हैं—भागो, पुलिस आ रही है ! अश्रुगैस ! भागो-भागो ! कोलाहल ! वृद्ध अपने स्थान से उठ खड़ा होता है। आगे बढ़कर आवाज़ की दिशा की ओर देखता है।]

छैला : क्या बात है ?

भिखारी : भागदौड़ !

छैला : क्यों ?

भिखारी : किसे अपनी जान प्यारी नहीं। (थमकर)

यहां से टल जाना होगा।

[वह अपना सामान उठाकर जाने को होता है।]

छैला : कहां जा रहो ?

भिखारी : अपने को पुलिस की लाठी खानी नहीं है। (थमकर) लोग इधर भागे आ रहे हैं।

[कोलाहल पराकाष्ठा पर।]

छैला : तुमने मुझे पता नहीं बताया !

भिखारी : किसका पता ?

छैला : बड़े आदमी का, जिससे मुझे अपने गांव के मजदूरों की ओर से मिलना है।

भिखारी : तुम अपने गांव के नेता हो ?

छैला : नहीं तो।

भिखारी : तो फिर ?

छैला : मैं प्रतिनिधि हूं उनका। लोगों की मांगें मुझे बड़े आदमी के सामने रखनी हैं।

भिखारी : बड़े आदमी का नाम जाने बिना मैं तुम्हें उसका पता कैसे बता सकता हूं।

छैला : अभी बताता हूं उसका नाम। (अपनी जेब से कागज का टुकड़ा निकालते हुए) यह रहा। (पढ़कर) अहमाथे !

भिखारी : अहमाथे ! (व्यंग्य-भरी मुस्कान के साथ) भाई, यह जो हंगामा हो रहा है न, यह तुम्हारे

इसी बड़े आदमी के बड़े घर के सामने हो रहा है।

छैला : तुम्हारा मतलब विरोध प्रदर्शन तो नहीं ?

भिखारी : अब सिर्फ प्रदर्शन ही नहीं रहा। आपा-धापी और पथराव के साथ-साथ अब पुलिस की लाठियां भी बरसने लगी हैं।

छैला : तब तो उधर जाया नहीं जा सकता।

भिखारी : जाया तो जा सकता है पर उधर से सही-सलामत लौटा नहीं जा सकता।

छैला : लेकिन मुझे तो उत्तर लेकर गांव तक पहुंचना है।

[चिल्लाहट]

भिखारी : जान प्यारी है तो यहां से भाग निकलो !

छैला : मुझे अपना काम पूरा करके ही लौटना है। मैं तो हर हालत में बड़े आदमी से मिलकर ही लौटूंगा।

भिखारी : मालिक तुम्हारी रक्षा करे। (चला जाता है।)

[कोलाहल]

छैला : अजीब मुसीबत में आ फंसा। आगे कैसे जाऊं ?

[भिखारी की वापसी]

भिखारी : तुम्हें एक बात बताये जाता हूं। अगर तुम अपनी खैर मानो तो आगे मत बढ़ना।

छैला : पर मजदूरों की समस्या ?

भिखारी : वह तुम जानो।

[फिर से चला जाता है। कोलाहल पराकाष्ठा पर।]

छैला : अब क्या किया जाये ?

[मासा का घबराते हुए प्रवेश। उसके हाथ में गत्ता होता है जिस पर यह लिखावट होती है : मेरे-तेरे बीच का यह अंतर कब तक बना रहेगा ?]

भिखारी : ठहरो भाई, कहां जा रहे हो इस तेजी के साथ ?

मासा : (आंखों को एक हाथ से मलते हुए) धुआंधार।

छैला : (गत्ते को पढ़ते हुए) मेरे-तेरे बीच का यह अंतर कब तक बना रहेगा ?

मासा : यह बना रहे। (वह गत्ते को फेंककर दोनों हाथों से आंखों को मलता है।)

छैला : तुम लोग भाग रहे हो ?

मासा : (जाते हुए) यही समझ लो।

छैला : ठहरो तो !

मासा : क्या है ?

छैला : जब भागना ही था तो शुरू क्यों किया गया ?

मासा : मरकर क्या पाना है ? (चला जाता है ।)

छैला : (मूर्ति से) तुम बहुत अच्छी जगह पर हो, भाई। यहां खड़े-खड़े तुम सभी कुछ देख लेते हो। इतिहास ने तुम्हें बहुत अच्छी जगह दी है।

[अखबारवाले का प्रवेश—अखबारों के साथ।]

अखबारवाला : भारत ने परमाणु बम का विस्फोट किया··· ताजा खबर···इज्रायल और मिस्र के बीच तनातनी···(छैला से) आपको अखबार चाहिए ?

छैला : तुम्हें मालूम है, बगल की उस गली में क्या हो रहा है ?

अखबारवाला : क्या हो रहा है ?

छैला : खबरें तुम बेचते हो !

अखबारवाला : कुत्ते-बिल्ली की मौत की खबर अखबारों में नहीं आतीं।

छैला : ठीक है, तुम्हें जान प्यारी है तो उधर मत जाओ।

अखबारवाला : क्यों ?

छैला : कुत्ते-बिल्ली की मौत मारे जाओगे और तुम्हारी खबर अखबारों में नहीं आयेगी।

अखबारवाला : अरे, चुप रह। मेरी गलियों में मुझे डराने बैठे हो। (कोलाहल की दिशा में बढ़ जाता है।)

छैला : यहां तो किसी के हित की कहते भी खरी-खोटी सुननी पड़ती है।

[सिंहल का प्रवेश।]

सिंहल : पानी ! मासा ! मासा कहां है ?

छैला : क्यों भाई, तुम भी जुलूस से भागे आ रहे हो क्या ?

सिंहल : कुछ भी समझ लो, मासा कहां है ?

छैला : तुम घबराये-से दीख रहे हो ! क्या बात है ? (थमकर) उस दूसरी गली में जो बड़ा आदमी रहता है उस तक पहुंचने के लिए क्या कोई दूसरा रास्ता नहीं है ? (सिंहल उसे घूरकर देखता है।) मैं अपने गांव के मजदूरों की ओर से आया हूं। सामने के रास्ते पर दंगा-फसाद हो रहा है। कोई दूसरा रास्ता अगर हो तो बता दो।

[सिंहल आवेश में कुछ बोलना चाहता है। तभी केतु लंगड़ाता हुआ आ जाता है।]

केतु : भाग चलो, सिंहल ! (दोनों एक-दूसरे के कंधे पकड़े चले जाते हैं।)

[छैला बेंच पर जा बैठता है—चिंतित मुद्रा में]

छैला : बड़े आदमी से मिले बिना गांव लौट कर क्या मुंह दिखाऊंगा। कुछ भी हो, उनसे मिले बिना मैं यहां से टस से मस नहीं होऊंगा। (नींद से जागते हुए) पर यहां बैठे रहने से क्या होता है ? (रुककर) उधर की वह खलबली रुके तब तो !

[कोलाहल]

[अखबारवाला अपने को अखबारों से ढांपे भागता हुआ सामने आता है।]

छैला : मैंने मना किया था उधर मत जाओ !

[अखबारों को नीचे फेंककर अपनी आंखों को दोनों हाथों से मलते हुए अखबार वाला इधर से उधर होता है।]

अखबारवाला : यहां कहीं पानी नहीं है ?

छैला : मुझे भी तो कब से जोरों की प्यास लगी है।

अखबारवाला : मुझे प्यास नहीं लगी है।

छैला : तो फिर ?

अखबारवाला : मेरी आंखें जली जा रही हैं।

छैला : तुम इधर बैठो, मैं ठंडक पहुंचाता हूं। (उसे थामकर बेंच पर बिठाता है। अपनी जेब टटोलने के बाद) तुम्हारे पास रूमाल है ?

[अखबारवाले की जेब में हाथ डालकर रूमाल निकालता है। उसे मुंह की हवा से गरम करता है।]

क्यों, तुम गांजा पीते हो ?

[रूमाल को सूंघता है। फिर उसे हवा से गरम करके अखबारवाले की आंखों तक ले जाता है—दो-तीन बार करने के बाद]

अखबारवाला : बस करो।

छैला : क्यों, कुछ ठंड हुई न ?

अखबारावला : हां-हां, हुई।

छैला : इसीलिए मैं उधर नहीं जा रहा।

अखबारवाला : अश्रुगैस के कारण ?

छैला : नहीं। यह जाकर फिर भाग आना। भागना अच्छा नहीं होता।

अखबारवाला : एक बार उधर जाकर देखो तो अपने-आप पता चल जायेगा कि क्या अच्छा होता है क्या नहीं।

[अखबारों को उठाकर चल देता है।]

छैला : साला मुझे डरपोक समझता है।

[सामने पड़े हुए गत्ते को उठा लेता है। दो कदम चलकर रुकता है कि इतने में अहमाथे सामने आ जाता है।]

छैला : आप कौन हैं ?

अहमाथे : (भयभीत स्वर में भी अधिकार की छाप के साथ) तुम कौन हो ?

छैला : मैं जो हूं, वह दीख रहा हूं।

अहमाथे : तुम भी प्रदर्शनकारियों में से हो।

[बिना कुछ कहे छैला अपने हाथ के गत्ते को देखता है और व्यंग्यात्मक हंसी के साथ गत्ते को बहुत ही धीरे से नीचे रखकर अपने दोनों हाथों को जल्दी-जल्दी कपड़े पर पोंछ लेता है।]

अहमाथे : तुम लोगों से बच निकलना मुश्किल है। सोचा था, कार से न जाकर आम सड़क के उस झमेले से बच जाऊंगा, पर इस दूसरे रास्ते पर भी मुसीबत खड़ी मिल गयी।

छैला : दूसरा रास्ता ? किधर से जाता है वह ?

अहमाथे : क्या ?

छैला : किधर से जाता है बड़े साहब तक पहुंचने वाला दूसरा रास्ता ?

अहमाथे : किस बड़े आदमी की बात कर रहे हो ?

छैला : श्री अहमाथे।

अहमाथे : आखिर इस विरोध प्रदर्शन का मतलब क्या ? क्या है जो लोगों को नहीं मिला ?

छैला : कैसा प्रदर्शन ?

अहमाथे : जो तुम लोग कर रहे हो !

छैला : मैं कोई प्रदर्शन नहीं कर रहा।

अहमाथे : तो फिर ?

छैला : मैं गांव से आया हूं।

अहमाथे : और यह गत्ता ?

छैला : कोई भागते हुए छोड़ गया है।

अहमाथे : (कुछ आराम से) तो तुम गांव के हो !

छैला : हां।

अहमाथे : किस गांव के ?

छैला : जिस गांव से यहां का बड़ा आदमी आया है !

अहमाथे : तुम्हारा मतलब है अहमाथे ?

छैला : हां वही।

अहमाथे : तुम उसे पहचानते भी हो ?

छैला : बहुत पहले गांव में जब उन्हें देखा था उस समय तो वे कुछ और ही रहे होंगे। लोग कहते हैं कि अब तो एकदम बदल गये हैं। इधर गांव में उनका आना भी नहीं होता।

अहमाथे : कैसे आऊं ! इधर के कामों से कभी फुरसत मिले तब तो !

छैला : (चौंककर) तो क्या···आप हीं हैं बड़े साहब ?

अहमाथे : तुम्हें दीखता नहीं ?

छैला : पर इधर आपके घर के सामने पुलिस और लोगों की मुठभेड़···?

अहमाथे : इसीलिए तो इस दूसरे रास्ते से चुपके

निकल रहा हूं। अगर समय पर हवाई अड्डे पर नहीं पहुंचा तो जहाज चला जायेगा ! बहुत ही जरूरी मिशन पर मुझे अमरीका जाना है।

छैला : पर लोग बता रहे हैं कि अभी कल ही आप चीन से लौटे हैं !

अहमाथे : तुम्हीं देख रहो न। सांस लेने की भी फुरसत नहीं, और ये बेसमझ उतावले लोग घर के सामने रास्ता रोके खड़े हैं।

[धीमा कोलाहल]

छैला : तो आप ही बड़े साहब हैं ! मुझे माफ करें, आपको पहचाना नहीं। (टोकरी से हार निकालकर) गांव वालों की ओर से यह हार लाया हूं। (उसे पहना देता है।)

अहमाथे : बहुत धन्यवाद ! बहुत धन्यवाद !! मैं बहुत जल्दी में हूं, नहीं तो तुमसे लंबे समय तक बातें करता ! मुझे जल्दी से कोई टैक्सी पकड़कर हवाई अड्डे पहुंचना है। क्यों, गांव वाले अच्छे तो हैं न ? मैं तुम्हारे बाप को बहुत अच्छी तरह जानता था। वह मेरा बहुत ही गहरा दोस्त था। हम एकसाथ फुटबाल खेलते थे।

छैला : कौन ? मेरा बाप ?

अहमाथे : हां, तुम्हारा बाप।

छैला : वे तो एक पांव के ठहरे ।

अहमाथे : अभी तो पिछले ही महीने मैं उससे मिला था ।

छैला : मेरे पिता से ?

अहमाथे : हां !

छैला : उनको तो स्वर्गवासी हुए दो वर्ष हो गये । (आखिरी कुछ शब्द भर्राये हुए स्वर में ।)

अहमाथे : अच्छा, तो मैं चलता हूं । अमरीका से लौटने पर तुम लोगों से मिलने गांव आऊंगा ।

छैला : ठहरिए ! एक मिनट ! आपसे एक जरूरी काम है ।

अहमाथे : इस समय मैं जल्दी में हूं । फिर भी···मेरे अमरीका से लौटने पर तुम आ जाना ।

छैला : गांव वालों ने मुझे भेजा है । मेरा खाली हाथ लौटना ठीक नहीं रहेगा ?

अहमाथे : देर हो रही है ।

छैला : मैं आपका ज्यादा समय नहीं लूंगा । गांव की औरतें जंगलों से घास नहीं काट सकतीं—सारे जंगल को मालिकों ने हिरण के शिकार के लिए घेर लिया है । गाय पालना मुश्किल है ।

अहमाथे : जहाज का वक्त होने को है ।

छैला : दो मिनट ! केवल दो मिनट !

अहमाथे : बता भी तो, बात क्या है ?

छैला : गांव वालों की पांच बातें लेकर आप तक

पहुंचा हूं ।

अहमाथे : पांच बातों के लिए मेरे पास समय कहां है ?

छैला : मैं जल्दी-जल्दी बताये देता हूं । पहली बात यह है कि आजकल गांव में बेकारी बहुत अधिक बढ़ गयी है ।

अहमाथे : गांव वाले बहुत अधिक बच्चे पैदा कर रहे हैं ।

छैला : अस्पताल में दवा नहीं है ।

अहमाथे : लोग बीमार भी ज्यादा होने लगे हैं ।

छैला : समुद्र के हर किनारे पर होटल बन गये हैं । हमें गंगा-पूजा के लिए जगह नहीं ।

अहमाथे : मूर्ख हैं गांव वाले । गंगा-पूजा गंगा किनारे होती है, समुद्र किनारे नहीं ।

छैला : लगता है, हमें अपनी झोंपड़ियों के लिए भी कर चुकाना होगा ।

अहमाथे : समानता कैसे स्थापित होगी ? कुटियों का महत्व महलों से कम नहीं हो सकता ।

छैला : टूरिस्टों के कारण गोश्त-मछली मुहाल है ।

अहमाथे : यह तो हम हिन्दुओं के लिए बिन मांगी मुराद हुई । शास्त्रों में गोश्त-मछली खाना पहले ही से मना किया गया है ।

[घड़ी देखते हुए]

फ्लाईट का समय हो गया। मैं यही हूं...
टैक्सी ! टैक्सी !

छैला : बड़े साहब, मैं गांव वालों को क्या जवाब दूं ?

अहमाथे : (आगे जाते हुए) तुम्हें गांव में जाने की जरूरत नहीं।

छैला : मतलब !

अहमाथे : (पीछे आकर) तुम गांववालों के चक्कर से अपने को बचाकर अपने बारे में सोचो। जब तक मैं लौटता नहीं, तुम यहीं शहर में रहो। मेरे लौटने पर मुझसे मिलना। कुछ से कुछ बन जाओगे ! समझे।

[चला जाता है।]

छैला : बड़े साहब ! बड़े साहब !!

[झपटकर फिर लौट आता है और चेहरे को हाथों में लिये बेंच पर बैठ जाता है।]

तीसरा अंक

वही दृश्य :

शाम का समय ।

[बेंच पर सिंहल और केतु बैठे हैं। केतु अपनी जेब से केला निकालता है। सिंहल उसके हाथ से केला लेकर छिलका उतारता है। केले का छोटा-सा टुकड़ा तोड़कर केतु को देता है।]

केतु : तुम बराबर की बात करते हो ।

[सिंहल केले के लंबे टुकड़े से छोटे टुकड़े को नापते हुए लम्बे टुकड़े से ज्यादे केले को खा जाता है। फिर दोनों टुकड़े जब बराबर के हो जाते हैं तब वह पहला टुकड़ा केतु को थमा देता है।

मंच की दाहिनी ओर से अखबारवाले और भिखारी का प्रवेश। अखबारवाला और भिखारी बैठ जाते हैं। मूर्ति के नीचे प्रेमी अकेला मन मारे बैठा है।]

केतु : तुम्हारा केला कहां है ? बांटोगे नहीं ?

सिंहल : मैं पहले ही खा चुका।

[दो मजदूरों का बातें करते हुए प्रवेश। दोनों मंच की बायीं ओर खड़े हो जाते हैं।]

पहला मजदूर : रोज एक नयी यूनियन पैदा होती है।

दूसरा मजदूर : होगी ही।

पहला मजदूर : क्या मतलब ?

दूसरा मजदूर : वह देखो, आ गया।

पहला मजदूर : कौन ?

[मासा दाहिनी ओर से आकर प्रेमी के पास खड़ा होता है। अपने हाथ के बहुत सारे कागजों को अपने पैर के पास रखते हुए]

मासा : गांव का वह आदमी बहुत भोलाभाला था इसलिए बहुत कम कीमत में बिक गया। उसने उन सारे लोगों को धोखा दिया जिन्होंने उस पर विश्वास किया था। एक आदमी की खुदगर्जी के कारण गांव वाले लड़ाई हार गये। (कुछ जोर से) लेकिन हम शहर वाले इस लड़ाई को इतनी जल्दी और इतनी आसानी से नहीं हारेंगे। हमारी लड़ाई अब शुरू हो रही है और वह…

सिंहल : (खड़े होकर) उस वक्त तक चलती रहेगी

जब तक कि हमारी जीत न हो जाये।

मासा : तुम अपनी जगह पर बैठ जाओ ! तुम सुनने वाले हो। सुनने वाले बोला नहीं करते।

केतु : हां, जिस तरह बोलनेवाले सुना नहीं करते।

मासा : चुप रहो।

भिखारी : मुझे एक सवाल करना है।

मासा : किससे !

भिखारी : नयी यूनियन के लीडर से।

मासा : वह तो मैं हूं।

भिखारी : तो फिर तुम्हीं से।

केतु : अभी तो भाषण शुरू भी नहीं हुआ है।

मासा : तुम चुप रहो ! भाषण शुरू हो चुका है।

केतु : किसने कहा शुरू हो चुका है ?

मासा : तुम्हारे बाप ने।

सिंहल : भाषण जारी रहे।

मासा : जनता का हर शब्द सोने के वजन का होता है और··· (वह नीचे से कागजों के बीच से एक कागज उठाता है और उसमें से पढ़कर) जनता का हर शब्द सोने के वजन का होता है और उसके अधिकारों की रक्षा नेता का परम कर्तव्य होता है। जिस तरह दिन में एक ही बार में आकाश में दो सूरज नहीं दिखाई पड़ सकते ठीक उसी तरह··· (कागज को

गौर से देखते हुए उसे पढ़ने के असफल प्रयत्न के बाद फेंक देता है) मेरे दोस्तो—तंग आ गये, लोग क्रांति करते हैं। हम तंग आ गये हैं।

सिहल : महंगाई से ! बेकारी से !

मासा : तुम चुपचाप बैठो, नहीं तो पुलिस को बुलवाकर तुम्हें हवा खाने को भिजवा दूंगा।

पहला मजदूर : (दूसरे मजदूर के कान में) साला नेताओं की तरह बोलने लगा।

[एकाएक हवा कुछ तेज होने के कारण नीचे रखे हुए कागज इधर से उधर उड़ने लग जाते हैं। मासा, सिहल और केतु उन्हें बटोरने में लग जाते हैं। प्रेमी अपने में खोया हुआ उसी मुद्रा में बैठा रहता है।]

भिखारी : (अखबारवाले से) क्यों भाई, इन कागजों में क्या है ?

अखबारवाला : इनमें वायदे हैं।

भिखारी : तो ये वायदे हवा से उड़ जाते हैं क्या ?

अखबारवाला : हां, ऐसा ही होता हैं। ये हवा में उड़ जाते हैं।

भिखारी : तो फिर पूरे कहां होते हैं ?

अखबारवाला : हवा में।

मासा : (फिर से भाषण देने की मुद्रा में खड़े होकर) अब हम चुप बैठे नहीं रह सकते। इस देश

में हमें बिजली-बत्ती का खंबा समझा जाता है। हमें बार-बार ठगा गया है, बेवकूफ बनाया गया है। (थमकर) मैं आप लोगों से एक प्रश्न करना चाहता हूं। क्या आपको आगे भी बेवकूफ बनना गवारा है ?

पहला मजदूर : (दूसरे मजदूर से) यह किससे प्रश्न कर रहा है ?

दूसरा मजदूर : हमसे और किससे ?

पहला मजदूर : तो फिर बता दें कि हमें आगे बेवकूफ बनना नहीं है।

दूसरा मजदूर : वह तो हम अब भी बन रहे हैं।

मासा : ये लोग हमें ठगते रहे है। हमें सीढ़ियां समझकर हमारे ऊपर से होते हुए ये लोग ऊपर को चढ़ते जा रहे हैं और हम नीचे को छूटते जा रहे हैं। यह सब बंद हो जाना चाहिए। हम परिवर्तन चाहते हैं। आप लोग हम पर विश्वास कीजिए। हम आपको वचन देते हैं कि आपकी सभी मांगों को हम पूरा करके रहेंगे।

[कागजों के बीच विचार करने लगता है।]

केतु : मुझे भूख लगी है, मासा।

सिंहल : चुप रहो, भाषण हो रहा है।

केतु : पर मुझे जोरों की भूख लगी है।

सिंहल : तो मैं क्या करूं ?

केतु : तुमने नहीं सुना ?

सिंहल : क्या ?

केतु : वह जो मासा अभी-अभी कह रहा था। वह हमारी सभी मांगों को पूरा करेगा। उससे कहो, हमें रोटी दे भूख लगी है।

सिंहल : तुम खाक भी नहीं समझते ! वह राज-नीतिक भाषा में बोल रहा है।

केतु : यह क्या होता है ?

सिंहल : चुप रहो। मासा इधर देख रहा है। वह नाराज हो जायेगा।

केतु : नाराज हो जायेगा तो रोटी नहीं मिलेगी न ?

सिंहल : चुप भी तो रहो। वह घूर रहा है।

केतु : (जोर से) मासा, मुझे भूख लगी है।

मासा : भाइयो ! आप लोगों ने सुना ! इसे भूख लगी है।

अखबारवाला : इसे रोटी चाहिए ।

भिखारी : हां-हां, इसे रोटी चाहिए।

पहला मजदूर : (मासा से) क्यों भाई, तुम चुप हो गये। अभी-अभी तो तुम हमारी मांगों को पूरा करने की बात कर रहे थे।

दूसरा मजदूर : इस आदमी की मांग रोटी है।

मासा : ठीक है, इसकी मांग रोटी है। पर यह

आदमी खुदगर्ज है। इसे अपनी भूख का पता है पर वे जो दूसरे लोग सैकड़ों की संख्या में भूखे है उनके बारे में इसे कुछ भी पता नहीं। यह अपना दर्द जानता है, दूसरे के दर्द को यह महसूस नहीं करता।

केतु : सिहल ! यह मासा क्या कह रहा है रे ?

सिंहल : चुप !

मासा : हम उस समय तक रोटी नहीं खायेंगे, जब तक इस देश के सभी लोग दोनों जून की रोटी पाने न लग जायें। इस समय देश में हजारों लोग बेघर हैं। भूखे हैं।

केतु : मैं भी भूखा हूं। जोरों की भूख लगी है मुझे।

मासा : जब तक दूसरे लोगों की भूख नहीं मिट जाती तब तक हम लोग अपनी भूख को नहीं मिटा सकते। जब तक सभी लोगों को रोटी नहीं मिल जाती तब तक तुम्हारा रोटी खाना हराम है।

पहला मजदूर : (दूसरे मजदूर से) चलो यार, यह वही ग्रामोफोन रिकार्ड है।

दूसरा मजदूर : इसकी दूसरी ओर क्या है, यह भी सुन लें।

मासा : आप दोनों भाइयों को कुछ कहना है ? कुछ पूछना है ? मीटिंगों में सवाल करने की आजादी होनी चाहिए। लोग हर दिशा

से प्रश्न करें।

भिखारी : इतने प्रश्न करें कि बोलने वाले को वायदे करने का अवसर ही न मिले।

केतु : चुप रहो।

सिंहल : तुम चुप रहो।

केतु : मुझे भूख लगी है। तुम दोनों ने मेरे हिस्से की रोटी भी खा ली थी।

[सिंहल जेब से एलास्टोप्लेस्ट का टुकड़ा निकालकर केतु के मुंह पर चिपका देता है।]

मासा : हमारा हक मारा जा रहा है। हमारी रोटी दूसरे लोग खा रहे हैं। अगर इस समय हम सभी लोग एक सूत्र में नहीं बंधते हैं तो ये लोग हमें टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। अपने हक से मुहताज हम सभी लोगों को एक यूनियन के सदस्य बनकर अपनी रक्षा करनी है। अगर ऐसा न करते तो हमारा कोई भविष्य नहीं।

अखबारवाला : किस भविष्य की बात कर रहा है यह ?

भिखारी : जिसका गर्भ, इंजेक्शन से गिरा दिया गया है।

मासा : (नीचे से कुछ कागज उठाकर) इन पर्चों पर हमारी यूनियन की पूरी कार्यवाही का वर्णन हैं। हम चाहते हैं कि आप इन्हें

अच्छी तरह पढ़कर समझ लें, फिर इन्हें भरकर हमारी यूनियन का सदस्य बनिए।

[सिंहल को इशारे से बुलाकर उसे पर्चे थमाता है। सिंहल पर्चों को लोगों के बीच बांटता है।]

मासा : आप लोग देखेंगे कि हमने किस तरह आज धांधलेबाजी का विरोध किया है। हम उन सभी बातों का विरोध करते हैं जिनसे केवल मुट्ठी भर लोग दिन दूने रात चौगुने धनी बनते जा रहे हैं और बाकी लोग पहले से भी अधिक गरीब होते जा रहे हैं। हम सभी अनर्थों का विरोध करते हैं।

[केतु जो कि अपने पास पड़ी हुई एक बोतल से खेल रहा था, एकाएक चिल्ला उठता है। उसकी अंगुली बोतल के भीतर पहुंचकर बाहर आना नहीं चाहती। सिंहल भी पूरी ताकत के साथ खींचता है। केतु और भी जोर से चीखता है। बोतल के निकलने के बाद]

हमारी गरदन कुछ लोगों की मुट्ठी में फंसी हुई है। अगर हम चुपचाप रहेंगे तो हमारी गरदन दबोच दी जायेगी और…

[सामने से प्रेमिका गुजरती है। उस पर नजर पड़ते ही प्रेमी अपने स्थान से उठता है और उसके पीछे चल देता है।]

हमारे नौजवान आज गलत रास्ते पर हैं। हमें उनको सही रास्ते पर लाना है। आप लोगों ने देखा, उसके पांव में जूता नहीं था। एक तो नंगे पांव, ऊपर से रास्ता भी गलत। अब आप ही बतायें पांव में कांटा चुभेगा या नहीं ?

अखबारवाला : भाई, आप कहां से कहां पहुंच गये ? एक बात को पहले खतम तो कर लो फिर दूसरी बात उठाना।

मासा : दूसरी बात ?

अखबारवाला : नौजवानों की गलतियां बाद में ढूढ़ना पहले हमारे सवालों को तो सुलझ जाने दो।

मासा : तुम्हारा सवाल ? क्या है तुम्हारा सवाल ?

अखबारवाला : अखबार की बिक्री कम हो गयी। मेरे यहां दोनों जून रोटी मुहाल है।

मासा : सेंसर सिर्फ तुम्हारी अखबार पर ही नहीं वह जनता की जेब पर भी है।

भिखारी : जनता कंजूस होती जा रही है। मुझे पहले जो एक दिन में मिलता था अब सात दिन में मिलता है।

पहला मजदूर : लगता है यह भिखारियों और अखबार-वालों का यूनियन बना रहा है।

दूसरा मजदूर : तो फिर हम यहां क्यों झक मारें ?

पहला मजदूर : चलो चलते हैं।

मासा : हम हरएक व्यक्ति की समस्या सुनना चाहते हैं।

दूसरा मजदूर : सुनोगे तुम, पर उसे दूर कौन करेगा ?

मासा : यूनियन करेगी !

पहला मजदूर : यह तो हमेशा से सुनते आ रहे हैं।

दूसरा मजदूर : चलो यार ! मुंह की खाकर सभी नेता बनते हैं।

[दोनों वहां से चल पड़ते हैं।]

मासा : सिहल ! ये लोग जाने क्यों लगे ?

सिहल : तुम भाषण में गड़बड़ कर गये।

मासा : या तुम लोगों का आयोजन अच्छा नहीं रहा ? तुम दोनों से कुछ नहीं हो सकता। तुम यहां भी बेकार निकले।

केतु : (अपने मुंह से एलास्टोप्लेस्ट नोंचते हुए चीखकर) मुझे भूख लगी है। मुझे रोटी चाहिए।

मासा : शट-अप।

केतु : यह जगह जहां तुम खड़े हो, मेरी है। मैं वहां खड़ा था।

सिहल : चुप रहो।

केतु : मेरी जगह से हटो।

सिंहल : मुंह बंद करो।

केतु : नहीं ! तुम दोनों मेरी रोटी खा चुके हो ! मुझे मेरे हिस्से की रोटी कहीं से भी लाकर दो।

सिंहल : मीटिंग होने तक तो सब्र करो।

केतु : (चीखकर) नहीं, नहीं ! (वह सामने के सभी कागजों को फाड़ने लगता है)

मासा : सिंहल ! (थमकर) केतु हमारी मीटिंग में विघ्न डाल रहा है। लगता है इसे किसी पार्टी वाले ने पैसे दिये हैं।

(सिंहल केतु को पकड़ना चाहता है। केतु और भी भड़क उठता है। वह एकदम पागल-सा रोटी-रोटी चिल्लाता हुआ इधर से उधर दौड़ता हुआ मंच से बाहर हो जाता है।)

भिखारी . (अखबार वाले से) चलो भाई, हम भी चलें। ये लोग तो अपने आप में झगड़ने लगे।

अखबारवाला : चले थे दूसरों को सुलझाने। साले खुद उलझे हुए हैं।

(दोनों जाने लगते हैं। सिंहल और मासा दोनों को रोकना चाहते हैं पर असफल रह जाते हैं।)

मासा : (हार कर मूर्ति के पास बैठते हुए) सिंहल, अब

क्या किया जाये !

सिंहल : दूसरा उपाय ढूंढ़ा जाये !

मासा : किसलिए !

सिंहल : रोटी के लिए !

मासा : हमने केतु की रोटी खाकर अच्छा नहीं किया।

सिंहल : केतु की रोटी तुमने अकेले खायी थी ।

मासा : तुमको मुझे रोकना चाहिए था । खैर, अब आगे की सोचो ! कुछ घंटों में मेरे भीतर केतु की रोटी भी खतम हो जायेगी ।

[दो सिपाहियों का प्रवेश]

पहला सिपाही : तुम दोनों यहां पर गैर-कानूनी मीटिंग कर रहे थे ।

सिंहल : मैं नहीं, मासा कर रहा था ।

पहला सिपाही : तुम दोनों को हमारे साथ पुलिस स्टेशन चलना पड़ेगा ।

सिंहल : कहा न, मीटिंग मैं नहीं मासा कर रहा था ।

मासा : सिंहल, तुम भी मेरे साथ थे ।

सिंहल : मैं सुनने वालों में था । मीटिंग तुम कर रहे थे ।

पहला सिपाही : मीटिंग करने और सुनने वाले दोनों को हमारे साथ चलना होगा''तुम दोनों ने गैर-कानूनी काम किया है ।

सिंहल : (गिड़गिड़ाते हुए) मासा, मैं तुम्हें पहले ही रोक रहा था। तुमने मेरी बात नहीं मानी थी। अब तुम्हारे साथ-साथ मेरा भी हाल बेहाल है। (सिपाही से) मैंने कोई भी गैर-कानूनी काम नहीं किया। सभी कुछ मासा ने किया है। मैं इसे लाख रोकता रहा, इसने मेरी बात नहीं मानी। मुझे छोड़ दीजिए, मैं बेकसूर हूं।

[दूसरा सिपाही नीचे से पर्चे उठाकर देखता है।]

दूसरा सिपाही : यह पर्चा किसने तैयार किया था ?

सिंहल : मासा ने !

मासा : पर लोगों के बीच इसका वितरण सिंहल ने किया था।

दूसरा सिपाही : तुम दोनों ने जनता को धोखा देने की कोशिश की है।

पहला सिपाही : (पर्चा पढ़ते हुए) इसमें सरकार विरोधी बातें हैं। तुम दोनों इन सभी पर्चों के साथ इसी वक्त हिरासत में लिये जा रहे हो।

मासा : (सिंहल से) क्यों सिंहल ! तुम तो कह रहे थे कि ये बातें सरकार विरोधी बिलकुल नहीं ! ये क्या ऊटपटांग बातें लिख डाली हैं इसमें ?

सिंहल : जो बातें सच्ची हों वे ऊटपटांग कैसे हो

सकती हैं ?

पहला सिपाही : कुछ भी हो, इस पर्चे की सभी बातें विद्रोह की बातें हैं। तुम दोनों इसी वक्त गिरफ्तार किये जा रहे हो।

सिंहल : सच मानिए साहब, मैं एकदम बेकसूर हूं। मैं इस झमेले में बिलकुल नहीं पड़ना चाहता था। मुझे भूखे और बेकार रहना गवारा था, पर मैं इस तरह की मुसीबत के लिए बिलकुल तैयार नहीं था। मासा जबरदस्ती मुझे इस झमेले में घसीट लाया था। मैं कुछ नहीं जानता···निर्दोष हूं···

मासा : साला, बकरे की तरह मिमियाने लगा। हमें इन पर्चों के लिए गिरफ्तार किया जा रहा है और पर्चों की तैयारी तुमने की है। मैंने तुम्हें मना किया कि इसमें बड़े लोगों और सरकार के खिलाफ़ उलटी-सीधी बातें न आने पायें। पर तुम मेरी बात मानते तब तो !

सिंहल : मीटिंग का आयोजन तुमने किया था। बोल तुम रहे थे।

पहला सिपाही : बंद करो ! तुम दोनों को हमारे साथ चलना होगा।

सिंहल : (पुलिस के पैरों में गिर कर) मैं कभी भी कैद नहीं हुआ हूं। मुझे छोड़ दिया जाये। मैं कान पकड़ता हूं, अब कभी भूल से भी

मासा के बहकावे में नहीं आऊंगा।

दूसरा सिपाही : तुम चलते हो या गरदन दबोचे जाने के बाद चलोगे ?

[बगल से छैला के साथ अहमाथे का प्रवेश]

अहमाथे : यह क्या हो रहा है !

[दोनों सिपाही झट सलाम करते हैं।]

सिंहल : (हाथ जोड़े हुए) बड़े साहब, मैं निर्दोष हूं। मैंने आप लोगों के विरोध में एक शब्द भी नहीं कहा है।

पहला सिपाही : साहब ! यहां पर गैर-कानूनी मीटिंग चल रही थी।

सिंहल : मासा ! साहब मासा ! ···मैं कुछ नहीं जानता, इसने जबरदस्ती इसमें मुझे शामिल करवाया था।

अहमाथे : (मासा से) तुम जानते हो कि मीटिंग करना मना है, फिर भी तुम मीटिंग कर रहे थे !

मासा : साहब, यह मीटिंग नहीं थी। हम जनता से कुछ बातें कर रहे थे।

छैला : अगर तुम जैसे लोग जनता से बातें करने लगें तो फिर हम लोगों का क्या काम रह जाता है।

दूसरा सिपाही : साहब ! ये दोनों लोगों के बीच ये पर्चे

बांट रहे थे।

अहमाथे : क्या है इसमें ?

दूसरा सिपाही : विरोध !

अहमाथे : किसका विरोध ?

दूसरा सिपाही : हुकूमत का !

छैला : साले, नमकहराम हो तुम लोग। जिस थाली में खाते हो उसी में छेद करते हो। जिस हुकूमत में जी रहे हो, उसी का विरोध करते हो ?

दूसरा सिपाही : हम इन्हें हिरासत में ले रहे हैं।

छैला : ठीक है। हवालात की हवा लगेगी तब पता चलेगा। दोनों को ऐसी जगह बंद रखो जहां इनकी शोखी जाती रहे।

पहला सिपाही : (दोनों को आगे की ओर ठेलते हुए) चलो !

अहमाथे : ठहरो !

छैला : ठहरो !

अहमाथे : (पुलिस से) तुम दोनों जा सकते हो !

पहला सिपाही : (सलाम करते हुए) जो आज्ञा।

[दूसरा सिपाही भी सलाम करके उसके पीछे हो जाता है।]

सिहल : साहब, आप बहुत अच्छे हैं। आपको लाख लाख धन्यवाद।

छैला : दूर से बात कर।

सिहल : साहब ने हमें कैद जाने से बचा लिया, हम-

उनका यह उपकार कभी नहीं भूलेंगे।

अहमाथे : तुम दोनों करते क्या हो ?

मासा : साहब, मैं सीनियर कैम्ब्रिज पास हूं।

छैला : तुमसे यह नहीं पूछा गया है।

सिहल : हम बेकार हैं, साहब !

मासा : दो वर्ष से नौकरी तलाश रहा हूं मैं।

सिहल : तुम पागल हो।

[पागल का प्रवेश। वह रेलगाड़ी की नकल करता हुआ पूरे मंच का चक्कर काटता है।]

छैला : ए ! यह क्या मजाक है।

पागल : (रुककर) कहां जाना है आपको—वीयतनाम, बंगलादेश, हिरोशिमा, ब्याफ़रा, कांगो, वेलफास्त ! ···सभी स्वर्गों तक जाती है हमारी गाड़ी !

छैला : बंद करो यह पागलपन। तुम हो कौन ?

पागल : अगर आप चंगेज खां हैं तो मैं नेपोलियन हूं। पर आप चंगेज खां जैसे नहीं दीखते··· आपकी आंखों में हिटलर की लोलुपता है। नहीं आप···निक्सन हैं···माऊ हैं···माऊ हैं···निक्सन हैं···निक्सन हैं···आप निक्सन भी नहीं ! तो फिर आप कौन हैं ?

अहमाथे : चलो, अपना रास्ता लो !

पागल : रास्ते में कुत्ते हैं ! पकड़ लेंगे।

छैला : तो फिर जहन्नुम में जाओ।

पागल : वहां ठंड है...बहुत ज्यादा ठंड।

छैला : पागल है।

पागल : अंधेरे में सभी आदमी एक जैसे होते हैं।

छैला : तुम यहां से जाते हो या पुलिस को बुलायें।

पागल : एक हलवाई बहुत अधिक खाने के कारण मर गया!...मैं भूखा हूं...पर जिंदा हूं मैं अभी जिंदा हूं। ...कोहेन बेंडित मर गया...इयान पालाक जल गया...गेवारा को गोली लग गयी। ...मैं जिंदा हूं...मैं जिंदा हूं।

[चला जाता है।]

अहमाथे : कौन था यह?

सिंहल : पागल था।

अहमाथे : तुम दोनों पागल हो।

सिंहल : मासा इस बात को नहीं मानेगा।

मासा : चुप रहो।

अहमाथे : तुम दोनों यहां क्या कर रहे थे?

सिंहल : मैं इसकी बातों में आ गया था।

छैला : ये दोनों विद्रोही हैं।

सिंहल : साहब, मैं गरीब आदमी हूं।

छैला : क्या कहना चाहते हो?

सिंहल : रोटी के लालच में मैं मासा के बहकावे में आ गया था।

अहमाथे : गिड़गिड़ाना बंद करो।
सिहल : साहब की जो आज्ञा।
अहमाथे : बैठ जाओ।
सिहल : मुझे कोई एतराज नहीं। (वह बैठ जाता है।)
अहमाथे : (मासा से) तुम भी बैठ जाओ।

[मासा चुपचाप बैठ जाता है।]

छैला : इसी तरह बैठे रहो।
अहमाथे : खड़े हो जाओ।
छैला : खड़े हो जाओ!

[दोनों खड़े हो जाते हैं।]

अहमाथे : मेरे पास आओ।
छैला : साहब के पास आओ।

[दोनों उठकर अहमाथे के पास पहुंचते हैं।]

अहमाथे : तुम दोनों को मुझसे कोई शिकायत है?
छैला : तुम दोनों को सरकार से कोई शिकायत है?

[दोनों सिर हिलाकर ना करते हैं।]

छैला : हां या नहीं।
सिहल : नहीं···हमें सरकार से कोई भी शिकायत नहीं?
छैला : (मासा से) और तुम्हें?

मासा : मुझे भी नहीं ।

अहमाथे : तुम्हें किसी बात का विरोध करना है ?

मासा : हां !

अहमाथे : क्या कहा ?

सिंहल : मुझे किसी भी बात का विरोध नहीं करना है ।

अहमाथे : तुम्हें क्यों विरोध करना है ?

मासा : मैं युबा पीढ़ी का हूं ।

अहमाथे : तुम्हें किस बात का विरोध करना है ?

मासा : किस बात का ? पता नहीं ।

अहमाथे : आज से तुम्हें किसी भी बात का विरोध नहीं करना है । मैं तुम दोनों को अपने यहां नौकरी दे रहा हूं ।

सिंहल : नौकरी ?

मासा : मुझे भी…

अहमाथे : क्यों तुम्हें मेरे प्रस्ताव का विरोध करना है ?

मासा : नहीं तो ?

[वह नीचे के सभी कागजों को उठाकर फाड़ने लगता है ।]

परदा

